राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचारपत्र

संकल्प शक्ति

संकल्प शक्ति के बल पर आओ हम सब मिलकर भय-भूख-भ्रष्टाचार से मुक्त भारत का निर्माण करें।

पृष्ठ-8, मूल्य ₹5

डाक पंजीकरण संख्या- MP/SDLDn/0025/2026-2028

www.sankalpshakti.in गुरुवार 27 अगस्त से 02 सितम्बर 2026 वर्ष- 17, अंक : 31

नशा करने वाले व्यक्ति का परिवार कभी सुखी नहीं रह सकता: बहन संध्या शुक्ला

गुरुवरश्री के त्याग-तपस्या से चैतन्य है सिद्धाश्रम का कण-कण: आशीष शुक्ला

देवरी, सागर। सद्‌गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के पावन आशीर्वाद से दिनांक 19-20 अगस्त को भगवती मानव कल्याण संगठन के तत्त्वावधान में बलराम मैरिज गार्डन, सहजपुर रोड, महाराजपुर, तहसील-देवरी, ज़िला-सागर में आयोजित 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ। इस भव्य धार्मिक अनुष्ठान में हज़ारों श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई और भक्ति रस में सराबोर हुए।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर उपस्थित भारतीय शक्ति चेतना पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन सिद्धाश्रमरत्न संध्या शुक्ला जी ने विशाल जनसमुदाय को संबोधित किया। अपने ओजस्वी संबोधन में उन्होंने कहा कि ''इस श्रावण माह में यहाँ महाराजपुर में 'माँ' का गुणगान सम्पन्न हुआ। निश्चित मानिए कि इस दिव्य अनुष्ठान के माध्यम से भगवान् शिव का भी हमें आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। हमारे वेद-शास्त्रों में कहा गया है कि जहाँ भी माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की साधना-आराधना होती है, वहाँ पर देवाधिदेव- ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ-साथ सभी देवी-देवता अपनी कृपा व आशीर्वाद प्रदान करते हैं। भगवान् शिव का आशीर्वाद हमें इसलिए भी प्राप्त हो रहा होगा कि हमने इस श्रावण मास में उनकी लगन से पूजा की है और उनके विचारों पर चलना सीखा है।

भगवान् शिव ने विश्व की मानवता को, इस धरा को बचाने के लिए हलाहल (विष) का पान किया और उसे गले से नीचे नहीं उतरने दिया। उसी प्रकार परम पूज्य गुरुवर की विचारधारा पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति का, भगवती मानव कल्याण संगठन का, यह प्रयास रहता है कि वह हलाहल, वह विष समाज में न फैलने पाए। नशे को, शराब को, सबसे बड़ा विष हम इसलिए कहते हैं कि यह चारों तरफ से विनाश करता है। नशा करने वाले व्यक्ति का परिवार कभी सुखी नहीं रह सकता, नशा करने वाला व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं रह सकता, नशा करने वाला व्यक्ति कभी मानसिक रूप से चैतन्य नहीं रह सकता और न ही वह समाज के लिए कुछ कर सकता है। जिस दिन आप नशा छोड़ने में सफल होगए, उसी दिन से आपका शरीर, आपका घर मंदिर बन जाएगा। किसी भी देवी-देवता का आशीर्वाद वहीं प्राप्त होता है, जहाँ शुद्धता और पवित्रता होती है। यही कारण है कि परम पूज्य गुरुवरश्री नशे-मांस का भक्षण छोड़ने हेतु सबसे पहले निर्देशित करते हैं।

हमने समाज को नशामुक्त करने का, मांसाहारमुक्त करने का, चरित्रवान् बनाने का, जातिगत भेदभाव समाप्त करने का जो लक्ष्य ठाना है, माता भगवती और परम पूज्य गुरुदेव जी के आशीर्वाद से पूरा करके रहेंगे।''

भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय मुख्य सचिव सिद्धाश्रमरत्न आशीष शुक्ला (राजू भइया) जी ने अपनी धीर-गम्भीर वाणी में उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि '' ये पावन पवित्र क्षण; जब हम विकारों से दूर हटकर, अपनी समस्याओं से दूर हटकर 'माँ'-गुरुवर के चरणों के समीप बैठते हैं, तब यही वे क्षण होते हैं, जो हमें अतृप्तता से तृप्तता की ओर ले जाते हैं, अधर्म से धर्म की ओर ले जाते हैं।

हम समस्याओं से भागते हैं, हम परेशानियों से भागते हैं, लेकिन यह नहीं विचार करते कि समस्याओं से मुक्ति मिलेगी कैसे? पंचतत्त्वों से यह मानवशरीर निर्मित है और कुछ चीजों से आपको मुक्ति नहीं मिल सकती। गुरुदेव जी ने कहा है कि 'काम, क्रोध, लोभ, मोह, इनको कोई नष्ट नहीं कर सकता, लेकिन यदि आप साधनापथ पर चलते हैं और माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा को अपना इष्ट माना है, तो इनको अपने अधीन कर सकते हैं।' हम सौभाग्यशाली हैं कि गुरुदेव जी ने हमें पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम जैसा पवित्र धाम दिया है, जहाँ पिछले 30 वर्षों से 'माँ' का अखण्ड गुणगान चल रहा है। यह ऐसा पावन स्थान है, जहाँ के कण-कण को गुरुवरश्री ने अपने त्याग-तपस्या से चैतन्य किया है और यह वह स्थान है, जहाँ शेष 100 महाशक्तियज्ञ गुरुदेव जी के द्वारा सम्पन्न किए जाएंगे तथा जिन यज्ञों को सम्पन्न करने की क्षमता इस भूतल पर अन्य किसी के पास नहीं है।

भाइयों-बहनों, भक्ति, ज्ञान और आत्मशक्ति के क्षेत्र में आगे बढ़िए और अज्ञानान्धकार से दूर हटकर नशामुक्त, मांसाहारमुक्त व चरित्रवान् जीवन जीने का संकल्प लीजिए, तभी आप साधनापथ पर चल सकेंगे, तभी आप साधक बन सकेंगे। शारदीय नवरात्र की अष्टमी, नवमी व विजयादशमी तिथि, दिनांक 19-20-21 अक्टूबर को सिद्धाश्रम धाम में शक्ति चेतना जनजागरण 'त्रिशक्ति साधना' शिविर आयोजित होने जा रहा है, जिसमें अवश्य शामिल हों, निश्चय ही आपके जीवन में परिवर्तन आएगा।''

स्नेह, संकल्प और सामाजिक समरसता का पावन पर्व है रक्षाबंधन

हमारी संस्कृति में त्यौहारों का एक विशेष स्थान है, जो मानवीय संबंधों को प्रगाढ़ करने के माध्यम हैं। इनमें से सबसे अनूठा और आत्मीय पर्व है 'रक्षाबंधन'। प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्यौहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम, अटूट विश्वास और सुरक्षा के संकल्प का प्रतीक है। इस वर्ष यह पर्व 28 अगस्त को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। 'रक्षाबंधन' का अर्थ है–रक्षा का बंधन, जो केवल एक रेशमी धागा नही, बल्कि उत्तरदायित्व और स्नेह का एक महान सूत्र है।

सांस्कृतिक महत्त्व: रक्षाबंधन का इतिहास बेहद गौरवशाली और प्राचीन है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब भगवान् कृष्ण की उंगली घायल हुई थी, तब माता द्रौपदी ने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर उनकी उंगली पर बांधा था। इसके बदले में श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को आजीवन रक्षा का वचन दिया था। मध्यकालीन इतिहास में भी चित्तौड़ की रानी कर्मवती द्वारा हुमायूं को राखी भेजने और हुमायूं द्वारा उनके सम्मान की रक्षा करने का प्रसंग इस त्यौहार की महत्ता को दर्शाता है।

सामाजिक समरसता: आज के बदलते परिवेश में रक्षाबंधन का दायरा वल सगे भाई-बहन तक सीमित नहीं रह गया है। यह पर्व सामाजिक समरसता और वैश्विक भाईचारे का संदेश देता है। आज देश के नागरिक सीमाओं पर तैनात सैनिकों को राखी भेजकर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। इसके साथ ही, वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों को राखी बांधने की एक नई और सराहनीय परंपरा भी शुरू हुई है, जो प्रकृति की रक्षा का संकल्प दिलाती है।

सिद्धाश्रम धाम में रक्षाबंधन

आध्यात्मिकस्थली पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम में रक्षाबंधन पर्व अत्यंत श्रद्धा, हर्षोल्लास और पवित्रता के साथ मनाया जाता है। इस पावन अवसर पर देश-दुनिया से हज़ारों श्रद्धालु धाम में एकत्रित होते हैं, जहां शक्तिस्वरूपा बहनें- पूजा शुक्ला जी, संध्या शुक्ला जी और ज्योति शुक्ला जी, वहां उपस्थित गुरुभाई-बहनों की कलाई पर रक्षासूत्र (राखियां) बांधती हैं।

यहाँ रक्षाबंधन केवल सगे भाई-बहन तक सीमित न रहकर एक वृहद आध्यात्मिक परिवार के रूप में मनाया जाता है, जो भ्रातत्व भावना को बढ़ावा देता है।

आयुष्मान भारत योजना का यथार्थ

आयुष्मान भारत योजना का प्राथमिक उद्देश्य था बीमारी की स्थिति में चिकित्सा का खर्च वहन न कर सकने वालों को निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना, लेकिन ज़मीनीस्तर पर इसके कार्यान्वयन में कई गंभीर विसंगतियां सामने आ रही हैं। वर्तमान व्यवस्था के तहत मरीजों को केवल निर्धारित अस्पतालों में भर्ती होने की स्थिति और जटिल प्रक्रिया के बाद ही योजना का लाभ मिल पाता है। इसके कारण आयुष्मान कार्डधारी मरीजों के लिए ओपीडी सेवाएं और रोजमर्रा की आवश्यक दवाएं खरीदना अत्यंत कठिन होगया है। बिना भर्ती हुए दवा न मिलने की इस बाध्यता से योजना का मूल उद्देश्य प्रभावित हो रहा है।

इस संकट के समाधान के रूप में एक वैकल्पिक प्रस्ताव पर विचार करना आवश्यक है। यदि आयुष्मान कार्डधारकों के बैंक खातों में पाँच लाख रुपये की राशि सीधे हस्तांतरित (डीबीटी) कर दी जाए, तो इसके कई सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं--

समय पर इलाज: मरीज बिना किसी प्रशासनिक देरी के तुरंत नज़दीकी स्वास्थ्य केंद्र से उपचार ले सकेंगे।

दवाइयों की सुगम खरीद: अस्पताल में भर्ती हुए बिना भी ज़रूरत के अनुसार सीधे मेडिकल स्टोर से दवाइयां खरीदी जा सकेंगी।

विकेंद्रीकृत चयन: लाभार्थी अपनी सुविधानुसार सर्वश्रेष्ठ निजी या सरकारी अस्पताल चुनने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होंगे।

भ्रष्टाचार पर रोक: बिचौलियों और अस्पतालों द्वारा क्लेम के नाम पर की जाने वाली धोखाधड़ी समाप्त होगी।

यद्यपि, इस नकद हस्तांतरण मॉडल को लागू करने के लिए मज़बूत व्यवस्था की आवश्यकता होगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि राशि का उपयोग केवल चिकित्सा उद्देश्यों के लिए ही हो। सरकार को इस दिशा में नीतिगत सुधार करने की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि ग़रीबों, ज़रूरतमन्दों को सही मायने में स्वास्थ्य सुरक्षा मिल सके।

अलोपी शुक्ला, कार्यकारी सम्पादक-संकल्प शक्ति

आपसी सौहार्द का प्रतीक कजलियाँ पर्व

हमारी लोक संस्कृति की जड़ें हमारी परंपराओं और लोकउत्सवों में बहुत गहरी समाई हुई हैं। ऐसा ही एक अनूठा और ऐतिहासिक लोक पर्व है 'कजलियां' जो रक्षाबंधन के दूसरे दिन विशेष रूप से मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के कुछ हिस्सों में मनाया जाता है। यह पर्व नई फसल के स्वागत और आपसी भाईचारे का अनूठा संगम है। इस वर्ष 29 अगस्त को यह त्यौहार पूरे उल्लास के साथ पारंपरिक ढंग से मनाया जाएगा।

कजलियां पर्व का सीधा संबंध बुंदेलखंड के गौरवशाली इतिहास और चंदेल शासकों से है। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार, महोबा के राजा परमाल की पुत्री चंद्रावली श्रावण पूर्णिमा के दिन अपनी सखियों के साथ कीरत सागर झील में कजलियां विसर्जित करने गई थीं। तभी दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान ने महोबा पर हमला कर दिया था। तब महोबा के वीर योद्धाओं–आल्हा और ऊदल ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए न केवल दुश्मनों को खदेड़ा, बल्कि राजकुमारी और कजलियों की मर्यादा की रक्षा की थी। इस ऐतिहासिक विजय की खुशी में अगले दिन पूरे राज्य में कजलियां बांटी गईं, तभी से यह विजय और शौर्य के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

कजलियां विसर्जन: इस पर्व की तैयारी नागपंचमी से ही शुरू हो जाती है। घर की महिलाएं टोकरियों में मिट्टी भरकर गेहूं या जौ के दाने बोती हैं। रक्षाबंधन तक ये पौधे सात से आठ इंच लंबे होकर सुनहरे रंग के होजाते हैं, जिन्हें 'कजलियां' कहा जाता है। 29 अगस्त की शाम को महिलाएं पारंपरिक लोकगीत गाते हुए इन कजलियों को जलाशयों, नदियों या तालाबों में विसर्जित करेंगी। इसके बाद कजलियों के पौधों को एक-दूसरे को देकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए आपसी मनमुटाव भूलकर गले मिलेंगे। इतना ही नहीं, छोटे अपने बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं।

खेल के इतिहास में 29 अगस्त का दिन चमकता है स्वर्णिम अध्याय की तरह

हमारे देश भारत में हर साल 29 अगस्त का दिन देश के खेल इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय की तरह चमकता है। यह दिन भारत के महानतम हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 2012 में पहली बार इस दिन को राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया गया था। तब से यह दिवस देश के युवाओं को खेलों के प्रति जागरूक करने, शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने और खेल के क्षेत्र में देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित करने का एक राष्ट्रीय मंच बन गया है।

हॉकी के जादूगर की विरासत

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयागराज (इलाहाबाद) में हुआ था। उन्होंने अपनी जादुई स्टिक से पूरी दुनिया में भारतीय हॉकी का डंका बजाया। उनके नेतृत्व में भारत ने वर्ष 1928 (एम्स्टर्डम), 1932 (लॉस एंजिल्स) और 1936 (बर्लिन) के ओलंपिक खेलों में लगातार तीन स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा था। गेंद पर उनके गजब के नियंत्रण के कारण उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता था। बर्लिन ओलंपिक में उनके खेल से प्रभावित होकर खुद एडॉल्फ हिटलर ने उन्हें जर्मनी की नागरिकता और सेना में ऊंचे पद का लालच दिया था, लेकिन ध्यानचंद ने यह कहकर ठुकरा दिया कि 'भारत मेरा देश है और मैं इसी के लिए खेलूंगा।'

खेल दिवस की प्रासंगिकता: आज के डिजिटल दौर में, जहाँ युवा वर्ग मैदानों से दूर होकर स्क्रीन (मोबाइल/कंप्यूटर) पर अधिक समय बिता रहा है, राष्ट्रीय खेल दिवस की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। इस दिन देश भर में स्कूलों, कॉलेजों और खेल अकादमियों में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं और दौड़ का आयोजन किया जाता है। केंद्र सरकार द्वारा शुरू किया गया 'फिट इंडिया मूवमेंट' और 'खेलो इंडिया' जैसे अभियान इसी दिन की भावना को आगे बढ़ाते हैं, ताकि जमीनी स्तर से नई प्रतिभाओं को खोजा जा सके।

गरिमामयी आयोजन: राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति भवन में एक विशेष खेल अलंकरण समारोह का आयोजन किया जाता है। देश के राष्ट्रपति द्वारा देश के सर्वोच्च खेल सम्मानों (जैसे अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार और ध्यानचंद लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार) से देश के प्रतिभावान खिलाड़ियों और कोचों को सम्मानित किया जाता है, जो युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

महाराष्ट्र में 28 अगस्त से लागू होगा 'धर्म स्वतंत्रता कानून', जबरन धर्मांतरण पर सात साल की सजा का प्रावधान

मुंबई। महाराष्ट्र में जबरन, धोखे, लालच या दबाव बनाकर किए जाने वाले धार्मिक परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए 'महाराष्ट्र धर्म स्वतंत्रता अधिनियम, 2026' 28 अगस्त 2026 (रक्षाबंधन के दिन) से पूरे राज्य में लागू होने जा रहा है। राज्य के गृह विभाग ने इस संबंध में आधिकारिक गजट अधिसूचना (नोटिफिकेशन) जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा लाए गए इस क़ानून का मुख्य उद्देश्य महिलाओं, बच्चों और समाज के कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा करना और अवैध धर्मांतरण नेटवर्क पर नकेल कसना है। यह क़ानून राज्य के सभी धर्मों के नागरिकों पर समान रूप से लागू होगा। नए क़ानून के तहत बल, छल, प्रलोभन (पैसा, नौकरी या शादी का लालच) या पहचान छिपाकर कराया गया धर्मांतरण एक गंभीर अपराध माना जाएगा। इसके लिए दोषी को 07 साल तक की जेल और 01 लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है।

गैर-जमानती अपराध: इस क़ानून के तहत दर्ज होने वाले मामलों को गैर-जमानती श्रेणी में रखा गया है और यदि धर्मांतरण किसी नाबालिग, महिला, या अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति का कराया जाता है, तो दोषियों को 07 साल की सजा के साथ 05 लाख रुपए तक का जुर्माना देना होगा।

बड़ा फैसला: इस क़ानून की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यदि कोई अंतर्धार्मिक विवाह केवल गैर-क़ानूनी धर्मांतरण के उद्देश्य से किया गया है, तो उसे कोर्ट द्वारा अमान्य घोषित किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में, उस विवाह या संबंध से पैदा होने वाले बच्चे का क़ानूनी धर्म वही माना जाएगा जो विवाह से पूर्व उसकी मां का मूल धर्म था। इसके साथ ही, बच्चे का पिता की संपत्ति पर अधिकार सुरक्षित रहेगा और प्राथमिक कस्टडी मां के पास होगी।

यदि कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन करना चाहता है, तो उसे धर्मांतरण करने से 60 दिन पहले ज़िला मजिस्ट्रेट को लिखित आवेदन देकर इसकी सूचना देनी होगी

250 एकड़ में विकसित होगी 'आनंद काशी' योजना

वाराणसी। वाराणसी विकास प्राधिकरण करीब 30 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद शहर की पहली समेकित (इंटीग्रेटेड) गेटेड सिटी विकसित करने जा रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग-19 (वाराणसी-प्रयागराज मार्ग) पर स्थित ग्राम कल्लीपुर में लगभग 250 एकड़ के विशाल क्षेत्रफल में आनंद काशी आवासीय एवं बहुउद्देशीय टाउनशिप को आकार दिया जा रहा है। इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना के प्रथम चरण में करीब 4.56 लाख वर्गमीटर (150 एकड़) भूमि पर विकास कार्य अत्यंत तेजी से आगे बढ़ रहा है, जिसके लिए रेरा पंजीकरण अंतिम चरण में है।

116.86 करोड़ रुपये की बड़ी साइबर ठगी का भंडाफोड़, चार गिरफ़्तार

वाराणसी। उत्तरप्रदेश की वाराणसी साइबर क्राइम सेल और थाना चेतगंज पुलिस की संयुक्त टीम ने देशव्यापी नेटवर्क चला रहे साइबर अपराधियों के एक बड़े गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने इस गिरोह के सरगना समेत चार शातिर आरोपियों को गिरफ़्तार किया है। इस हाईटेक गिरोह ने फर्जी फर्म और बैंक खातों के जरिए अब तक 01 अरब 16 करोड़ 86 लाख 58 हज़ार 321 रुपये की ठगी को अंजाम दिया है. पुलिस जांच में इनके 41 बैंक खातों का पता चला है, जिन पर देश भर से कुल 143 एनसीआरपी शिकायतें दर्ज हैं।

अंतरिक्ष में लहराएगा तिरंगा: साल 2035 तक तैयार होगा भारत का अपना अंतरिक्ष स्टेशन

नई दिल्ली। चंद्रयान और आदित्य-छ1 की ऐतिहासिक सफलताओं के बाद भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक और बहुत बड़ी छलांग लगाने जा रहा है। केंद्र सरकार की हरी झंडी मिलने के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने साल 2035 तक अंतरिक्ष में भारत का अपना स्थायी घर यानी 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' स्थापित करने के मिशन पर बेहद तेजी से काम शुरू कर दिया है। इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना के पूरा होते ही भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में शामिल हो जाएगा, जिनका अंतरिक्ष में अपना स्वतंत्र बेस है।

कछुआ गति से हो रहा है शुक्लागंज गंगा पुल का निर्माण कार्य, जनता परेशान

उन्नाव। कानपुर और उन्नाव को जोड़ने वाले शुक्लागंज गंगा पुल के निर्माण कार्य की गति बहुत ही धीमी है। विभागीय लापरवाही और ढुलमुल रवैए के कारण तय समय सीमा बीत जाने के बाद भी पुल का काम अधूरा पड़ा है। पुराने पुल पर भारी वाहनों का दबाव बढ़ने से रोजाना घंटों लंबा ट्रैफिक जाम लग रहा है।

व्यापार पर असर: मार्ग बंद रहने और धूल-मिट्टी के कारण स्थानीय दुकानदारों का व्यापार ठप सा हो गया है।

अधिकारियों की उदासीनता: निर्माण एजेंसी और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच समन्वय की कमी साफ दिख रही है। मौके पर न तो पर्याप्त मजदूर तैनात हैं और न आधुनिक मशीनरी का उपयोग किया जा रहा है।

जनता में भारी आक्रोश: स्थानीय निवासियों का कहना है कि पुल का निर्माण जल्द पूरा होना चाहिए। हर दिन हजारों राहगीरों को जान जोखिम में डालकर सफर करना पड़ता है। यदि कार्य की गति यही रही, तो आगामी मानसून तक भी यह परियोजना पूरी होना मुश्किल है। नागरिकों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही काम में तेजी नहीं आई, तो वे उग्र आंदोलन को बाध्य होंगे।

खराब सड़कों के ख़िलाफ़ जोरदार प्रदर्शन

नई दिल्ली। दिल्ली के सोनिया विहार क्षेत्र में सड़कों की बदहाली और प्रशासन की अनदेखी से नाराज स्थानीय निवासियों ने सोमवार, दिनांक 24 अगस्त की सुबह मुख्य मार्ग पर उतरकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों में बड़ी संख्या में महिलाएं, बुजुर्ग और स्कूली बच्चों के अभिभावक शामिल थे। सड़क पर गहरे गड्ढों और जलभराव के कारण आए दिन होने वाले हादसों से गुस्साए लोगों ने दिल्ली सरकार और स्थानीय नगर निगम के ख़िलाफ़ जमकर नारेबाजी की।

क्षेत्रीय नागरिकों ने मांग की है कि टूटी सड़कों की जल्द से जल्द री-कारपेटिंग की जाए। नालियों की सफाई हो ताकि सड़कों पर पानी न जमा हो। चुनाव के समय किए वादों को धरातल पर पूरा किया जाए।

प्रशासन ने दिया आश्वासन

मौके पर पहुंची पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों को समझा-बुझाकर शांत कराया। संबंधित विभाग के अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही गड्ढों को भरने और सड़क निर्माण का काम शुरू कर दिया जाएगा। निवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि एक सप्ताह के भीतर काम शुरू नहीं हुआ, तो वे उग्र आंदोलन और चक्का जाम करने के लिए मजबूर होंगे।

ग्वालियर में नौ दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी शुरू

ग्वालियर। भारत सरकार के नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) की ओर से ग्वालियर ज़िला प्रशासन के समन्वय से शनिवार, दिनांक 22 अगस्त से एक भव्य पुस्तक प्रदर्शनी की शुरुआत की गई है। ऐतिहासिक महाराज बाड़ा पर स्थित शासकीय केंद्रीय पुस्तकालय में आयोजित यह नौ दिवसीय मेला आगामी 30 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 10:00 बजे से शाम 7:00 बजे तक पाठकों के लिए खुला रहेगा। शनिवार दोपहर को जिलाधिकारी (कलेक्टर) रुचिका चौहान ने दीप प्रज्ज्वलित करके इस ज्ञानोत्सव का विधिवत उद्घाटन किया।

इस प्रदर्शनी में एनबीटी द्वारा हर आयु वर्ग की पसंद और ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए उत्कृष्ट पुस्तकों का चयन किया गया है। मेले में ज्ञानवर्धक और साहित्यिक पुस्तकों के अलावा बच्चों और युवाओं के लिए बेहद रोचक कहानियों, उपन्यासों, लोकोपयोगी विज्ञान, देश-विदेश के महान क्रांतिकारियों व महापुरुषों की प्रेरक जीवनियों तथा 'भारत-देश और लोग' जैसी लोकप्रिय श्रेणियों की किताबें मुख्य आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

चिंतन

यदि आप 5-10 मिनट का ही ध्यान लगाने लग जायें, तो वर्ष-दो वर्ष के अन्दर ही या 4-6 महीने के अन्दर ही कई बार आपको अहसास होने लग जायेगा कि चाहते न चाहते अचानक आपकी प्राणवायु ऊपर चढ़ने लग जायेगी और आपको अ हसास होगा कि इससे आपको एक अलौकिक तृप्ति, एक अलौकिक आनन्द प्राप्त हो रहा है, एक अलौकिक लोक की ओर आप बढ़ते चले जा रहे हैं। आपके स्थूल शरीर का भान मिटता चला जा रहा है। आपके अन्दर एक दिव्यता आती जा रही है। आपका शरीर एकदम फूल सा कोमल होता जा रहा है। एक अलौकिक दिव्यता, एक हल्कापन, एक अलग तृप्ति, एक अलग आनन्द प्राप्त होगा।

ऋषिवाणी

धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज **श्री शक्तिपुत्र जी महाराज**

योग-ध्यान-साधना

शक्ति चेतना जनजागरण शिविर, सिद्धाश्रम (म.प्र.)
दिनांक- 20-10-2015

क्रमशः...

आप अधिकांश लोग यही गल्ती करते हो और फिर कहते हो कि हम मेहनत तो कर रहे हैं, फिर हमारी समस्या का समाधान क्यों नहीं हो रहा है? दूसरा एक बार माथा रगड़ रहा है, तो हम दस बार माथा रगड़ रहे हैं, दूसरा एक बार आश्रम आया था, हम चार बार आश्रम आये हैं, दूसरे ने एक शिविर का लाभ लिया था, हमने दस शिविरों का लाभ लिया है, फिर भी हमें लाभ क्यों नहीं मिल रहा है? इसलिए, क्योंकि पूर्व की बहुत लम्बी यात्रा आप लोगों ने तय की है और तब आपने यह नहीं किया, जो आज कर रहे हो। आप कुआं खोदने के मार्ग में ही बढ़ रहे हो, अपने अन्तःकरण का कुआँ, अपनी 'माँ' के नज़दीक जाने का कुआँ। आप अपनी सुषुम्ना नाड़ी को खोल ही रहे हो और जितना आपकी सुषुम्ना नाड़ी खुलती चली जायेगी, आपकी समस्याओं का समाधान होता चला जायेगा कि आपके अन्दर वह ऊर्जारूपी, शक्तिरूपी कूप पैदा होजाये, जिससे आप विषय-विकारों को नष्ट कर सको। यदि किसी भी प्रकार के विषय-विकारों की इच्छा उत्पन्न होजाये, तो आप एक क्षण के विचार से उसे दूर भगा सको। कोई बड़ी दुर्घटना होने वाली हो, तो उसे टाल सको और यह तब होगा, जब आप तपस्यात्मक जीवन जियोगे।

एक जीवन की यात्रा आपको मेरे सान्निध्य में प्राप्त हो रही है, उसे मेरे साथ में गुजारो, मेरे विचारों के आधार पर चलो, आपका कुछ नहीं जायेगा। आप सुख-शान्ति-समृद्धि का जीवन जीते रहोगे तथा जो समस्याएं भी आती हैं, मैं उनका भी सहभागी हूँ, बड़ी से बड़ी समस्या कुछ कम करके ही आयेगी। जिस समस्या में आप तनावग्रसित होजाते हो, आत्महत्या कर लेते हो, वहाँ भी आपको सहारा प्राप्त होगा। वह सहारा तभी छूटेगा, जब आप इस सहारे को छोड़ दोगे। यदि आपने इस सहारे को पकड़ रखा है, तो आप पतन के मार्ग पर नहीं जा पाओगे। पूर्व जीवन के कोई बहुत ही बड़े बाधक योग हों, तभी आपके जीवन में उस तरह की घटनाएं हो सकती हैं कि आप जिसके पात्र न हों, उतनी पात्रता आपने अर्जित न की हो। इसलिए मैंने कहा है कि यह मांगने या लेनदेन का मार्ग ही नहीं है। जैसा गुरु चाहता है, केवल उस मार्ग पर चल पड़ो, बिन मांगे सबकुछ मिलता चला जायेगा।

हमें आनन्द तभी आयेगा, जब हमारे अन्दर पात्रता होगी। हम दूसरे का पात्र भी लेना चाहते हैं, फिर उस पात्र को दूसरे से भरवाना भी चाहते हैं, तो दूसरे का पात्र हमें कब तक सहारा देगा? अतः अपने पात्र को विकसित करो। उस प्रक्रिया को भूल जाओ कि जब आग लगेगी, तब कुआँ खोद लेंगे, जब भूख लगेगी, तब खेत की जुताई-बुआई कर देंगे। यदि सभी किसान यही सोचने लगें कि जब भूख लगेगी, तब बीज लेकर जायेंगे, खेत को जोतेंगे-बोएंगे, तो क्या खेत तुरन्त अन्न पैदा करके दे देगा? यह सत्य है कि खेत में बीज बोने से फसल उगती है, फसल को काटकर लाने और उसको अन्न के रूप में तैयार करने के बाद वह अन्न हमारी भूख को मिटाता है।

शेष अगले अंक में...

संकलन
पूजा शुक्ला

संतान की दीर्घायु और कृषि संस्कृति को समर्पित पावन पर्व हलषष्ठी

भारतीय त्यौहारों का सीधा संबंध प्रकृति, कृषि और पारिवारिक कल्याण से जुड़ा रहता है। ऐसा ही एक आस्था और कठिन तप का अनूठा पर्व है 'हलषष्ठी', जिसे देश के विभिन्न हिस्सों में ललही छठ, हरछठ या तिनछठ के नाम से भी जाना जाता है। प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाने वाला यह व्रत इस वर्ष 02 सितंबर को श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। यह व्रत माताएं अपनी संतान की लंबी उम्र, अच्छी सेहत और सुख-समृद्धि की कामना के लिए पूरी तरह निराहार रहकर रखती हैं।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस पावन तिथि पर द्वापर युग में शेषनाग के अवतार और भगवान् श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम जी का जन्म हुआ था। बलराम जी का मुख्य अस्त्र 'हल' और 'मूसल' है, इसी कारण इस दिन को 'हलषष्ठी' कहा जाता है। इस दिन हल की पूजा की जाती है और कृषि संस्कृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। माना जाता है कि इसी व्रत के प्रभाव से संतान पर आने वाले सभी संकट दूर हो जाते हैं।

व्रत के कड़े नियम और विशेषताएं

हलषष्ठी का व्रत बेहद कठिन माना जाता है और इसके नियम भारतीय त्यौहारों में सबसे अलग हैं।

हल से जुते अनाज का निषेध: इस व्रत में हल से जुते हुए खेत का उगा हुआ कोई भी अन्न या फल खाना पूरी तरह वर्जित होता है। माताएं केवल तालाब में उगने वाले पसही के चावल (तिन्नी का चावल) और महुए का सेवन करती हैं।

भैंस के दूध-घी का उपयोग: इस दिन गाय के दूध, दही या घी का प्रयोग पूरी तरह वर्जित होता है। पूजा से लेकर फलाहार तक में केवल भैंस के दूध और उससे बने उत्पादों का ही उपयोग किया जाता है।

छठ माता की पूजा: घर के आंगन या पवित्र स्थान पर छोटा सा तालाब (गड्ढा) बनाकर उसमें झरबेरी, पलाश और कांस की झाड़ियां लगाई जाती हैं, जिसे 'हरछठ' कहा जाता है। वहां माताएं एकत्र होकर जल, सात प्रकार के अनाज (सतनाजा) और महुआ चढ़ाकर पूजा-अर्चना करती हैं।

नासा के रोवर द्वारा भेजी गई मंगल ग्रह की एक तस्वीर में एक रहस्यमयी आकृति

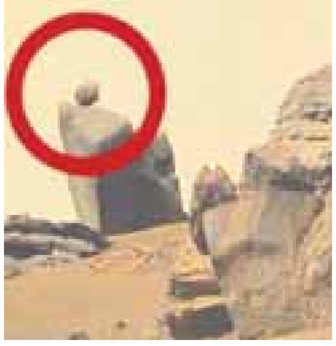

नासा के रोवर द्वारा भेजी गई मंगल ग्रह की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है, जिसमें एक 'रहस्यमयी आकृति' दिखाई दे रही है। कई लोग इसे एलियन होने का दावा कर रहे हैं, जबकि वैज्ञानिकों ने इसे केवल चट्टान का एक टुकड़ा बताया है।

सोशल मीडिया और कुछ यू-ट्यूब चैनलों पर दावा किया जा रहा है कि नासा के रोवर ने मंगल ग्रह की सतह पर एक जीवित प्राणी या एलियन की मूर्ति को कैमरे में कैद किया है।

नासा का स्पष्टीकरण: वैज्ञानिकों के अनुसार, यह कोई एलियन नहीं बल्कि परेडोलिया नाम की एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है। इस स्थिति में हमारा दिमाग अजीब आकृतियों, जैसे कि पत्थरों या बादलों में इंसानी चेहरे या जाने-पहचाने आकार ढूंढ़ने लगता है।

देश के 8.7 करोड़ युवा न पढ़ाई कर रहे, न नौकरी!

15 से 29 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की स्थिति सबसे अधिक चिंताजनक: नीति आयोग

नई दिल्ली। देश में 15 से 29 वर्ष के आयु वर्ग में 8.7 करोड़ युवा ऐसे हैं जो वर्तमान में न तो किसी स्कूल-कॉलेज में शिक्षा ले रहे हैं, न ही किसी रोजगार से जुड़े हैं और न ही किसी तरह का कोई हुनर (ट्रेनिंग) सीख रहे हैं। नीति आयोग की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, यह देश की युवा श्रम शक्ति की क्षमता का एक बहुत बड़ा नुकसान है। यह अनुमान राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 78वें दौर के आंकड़ों पर आधारित है।

रिपोर्ट का सबसे पेचीदा पहलू यह है कि इस 8.7 करोड़ की आबादी में से लगभग 88 प्रतिशत युवा केवल घरेलू कामों और ज़िम्मेदारियों में व्यस्त हैं। हालांकि रिपोर्ट में महिला और पुरुषों का अलग-अलग आंकड़ा नहीं दिया गया है, लेकिन विशेषज्ञ मानते हैं कि इसमें महिलाओं की हिस्सेदारी ज्यादा है। पारिवारिक ज़िम्मेदारियां, देखभाल, सुरक्षा की चिंताएं, सीमित गतिशीलता और कौशल प्रशिक्षण के लचीले विकल्पों की कमी युवाओं (विशेषकर युवतियों) को मुख्यधारा के कार्यबल में लौटने से रोक रही है।

डिग्री और काम में भारी अंतर

13 प्रतिशत स्नातक बेरोजगार: नीति आयोग ने शिक्षा और रोजगार के बीच के गंभीर अंतर को भी रेखांकित किया है। आंकड़ों के मुताबिक, देश में केवल 8.25 प्रतिशत ग्रेजुएट्स ही ऐसे हैं जो अपनी शैक्षणिक योग्यता के अनुरूप नौकरी कर पा रहे हैं। वहीं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले स्नातकों में बेरोजगारी की दर लगभग 13 प्रतिशत है। इसका मुख्य कारण यह है कि कॉलेजों में मिलने वाली पारंपरिक शिक्षा उद्योग की व्यावहारिक ज़रूरतों और उभरते हुए आधुनिक क्षेत्रों (जैसे एआई, डिजिटल तकनीक) से मेल नहीं खा रही है। **पैसे की कमी बनी सबसे बड़ी रुकावट:** नीति आयोग के अनुसार, देश के कम आय वाले परिवारों के छात्र पहले से ही स्कूल-कॉलेज की फीस और निजी ट्यूशन के आर्थिक बोझ तले दबे रहते हैं। ऐसे में उनके पास किसी भी अतिरिक्त पेड (शुल्क आधारित) स्किल ट्रेनिंग या तकनीकी कोर्स में निवेश करने के लिए पैसे नहीं बचते। इस आर्थिक मज़बूरी के चलते युवा स्नातक होते ही बहुत कम वेतन वाली किसी भी असंगठित नौकरी को चुनने के लिए विवश हो जाते हैं।

नीति आयोग के मुख्य सुझाव

सब्सिडी वाले कोर्स: युवाओं और महिलाओं के लिए बेहद किफायती या पूरी तरह सब्सिडी वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएं।

लोकल डिमांड पर फोकस: प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय बाज़ारों कीज़रूरतों और उभरते हुए नए औद्योगिक क्षेत्रों के अनुरूप होने चाहिए।

कमाई के साथ पढ़ाई: ऐसे विकल्प तैयार किए जाएं जहां कार्यबल और युवा काम करने (कमाने) के साथ-साथ अपनी स्किल को अपग्रेड (लर्न व्हाइल अर्न) कर सकें।

स्वरोजगार को बढ़ावा: युवाओं को केवल नौकरी खोजने वाला बनाने के बजाय उन्हें वित्तीय सहायता देकर स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

मानसून का आहार: सावन में हरी पत्तेदार सब्जियां क्यों बन जाती हैं जहर?

जब बारिश की पहली फुहार धरती पर पड़ती है, तो प्रकृति चारों तरफ हरियाली बिखेर देती है। लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा और हमारे पूर्वजों का एक बहुत ही कड़ा नियम रहा है— सावन (मानसून) के महीने में हरी पत्तेदार सब्जियां (जैसे पालक, मेथी, बथुआ, पत्तागोभी) का पूरी तरह से त्याग कर देना चाहिए। जो हरी सब्जियां सर्दियों में खून बढ़ाती हैं, वे बारिश के मौसम में हमारे पेट के लिए सबसे बड़ा खतरा क्यों बन जाती हैं? आइए इसके पीछे का विज्ञान समझते हैं।

बैक्टीरिया और कीड़ों का प्रजनन काल

बारिश के मौसम में हवा और मिट्टी में नमी (Humidity) सबसे ज्यादा होती है। यह नमी सूक्ष्मजीवों, फंगस और कीड़े-मकोड़ों के पनपने के लिए सबसे अनुकूल माहौल है। हरी सब्जियों के पत्ते जमीन के बहुत करीब होते हैं और बारिश के कीचड़ के कारण इन पत्तों पर ऐसे सूक्ष्म कीड़े और उनके अंडे चिपक जाते हैं, जो सामान्य पानी से धोने पर भी नहीं निकलते। पेट में जाकर ये भयंकर इंफेक्शन, फूड पॉइजनिंग और हैजा (Cholera) का कारण बनते हैं।

पाचन तंत्र की कमजोरी

मानसून में हमारे शरीर की जठराग्नि (पाचन की आग) साल भर में सबसे ज्यादा कमजोर होती है। हरी पत्तेदार सब्जियां पचने में बहुत भारी होती हैं और गैस (वात) बढ़ाती हैं। कमजोर पाचन तंत्र इन्हें पचा नहीं पाता, जिससे पेट में सड़ांध और भयंकर गैस पैदा होती है।

दादी माँ का अचूक प्राकृतिक नुस्खा

कड़वी सब्जियों का अमृत: बारिश के मौसम में हरी पत्तियों की जगह बेल (Liana) पर लगने वाली सब्जियों का सेवन करें। लौकी, तरोई, टिंडा, परवल और विशेष रूप से 'करेला' (Bitter Gourd) मानसून की सबसे बेहतरीन औषधियां हैं। सप्ताह में दो बार करेले की सब्जी या इसका रस पीने से खून में पनपने वाले बैक्टीरिया मर जाते हैं और वायरल बुखार आस-पास भी नहीं फटकता।

भ्रांति (Myth): स्वस्थ रहने के लिए हर मौसम में ढेर सारा 'कच्चा सलाद' (Raw Salad) खाना बहुत जरूरी है।

सच (Fact): प्राकृतिक चिकित्सा ऋतु (मौसम) के अनुसार बदलती है। बारिश के मौसम में कच्चे सलाद (विशेषकर पत्तेदार या जमीन के नीचे उगने वाले कच्चे आहार) में बैक्टीरिया का खतरा सबसे ज्यादा होता है। मानसून में सब्जियों को हमेशा अच्छी तरह उबालकर (Steam) या पकाकर ही खाना चाहिए। यदि सलाद खाना ही हो, तो उसे हल्का सा भाप में पका (Blanch) लें।

डेंगू, मलेरिया और वायरल बुखार का प्राकृतिक 'ब्रह्मास्त्र'

मानसून की बारिश अपने साथ मच्छरों और तरह-तरह के वायरल बुखारों (जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया) की एक पूरी फौज लेकर आती है। जब ये बुखार शरीर पर हमला करते हैं, तो खून में प्लेटलेट्स (Platelets) तेजी से गिरने लगते हैं और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) जवाब दे देती है। ऐसी स्थिति में, जब एलोपैथिक दवाइयां भी काम करना बंद कर देती हैं, तब प्राकृतिक चिकित्सा का 'ब्रह्मास्त्र' काम आता है— और वह है 'गिलोय' (अमृता)।

अमृता: जो कभी मरने नहीं देती

गिलोय का संस्कृत नाम 'अमृता' है। यह एक ऐसी चमत्कारी बेल है, जिसे यदि आप काटकर फेंक भी दें, तो वह बिना मिट्टी के भी हवा से नमी लेकर फिर से हरी हो जाती है। ठीक यही जीवनदायिनी शक्ति यह हमारे शरीर को देती है। गिलोय शरीर के 'त्रिदोष' (वात, पित्त, कफ) को संतुलित करती है। यह खून के सफेद रक्त कणों (WBC) को इतना मजबूत बना देती है कि कोई भी वायरस खून में जिंदा नहीं रह पाता। यह गिरे हुए प्लेटलेट्स को जादू की तरह 24 घंटे के अंदर वापस बढ़ा देती है।

गिलोय के सेवन का सही प्राकृतिक तरीका

बाजार में मिलने वाली गिलोय की गोलियों या जूस से बेहतर है ताजी गिलोय का तना (Stem)।

•**काढ़ा बनाने की विधि:** एक उंगली जितनी मोटी और लंबी गिलोय की डंडी लें (पत्ते नहीं, डंडी का इस्तेमाल करें)। इसे इमामदस्ते (Mortar) में अच्छी तरह कूट लें। अब इसे दो गिलास पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा गिलास न रह जाए। हल्का गुनगुना होने पर इसे छानकर घूंट-घूंट पिएं। बारिश के मौसम में सप्ताह में 2-3 दिन सुबह खाली पेट इसे पीना, शरीर को फौलाद बना देता है।

जोड़ों का दर्द और शरीर की जकड़न: मानसून में वात वृद्धि का प्राकृतिक उपचार

जैसे ही मानसून की पहली बारिश होती है, बहुत से लोगों, विशेषकर बुजुर्गों के घुटनों, कमर और पुराने घावों (चोट) में अचानक तेज दर्द शुरू हो जाता है। लोग सोचते हैं कि यह दर्द ठंड के कारण है, लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार, बारिश के मौसम में यह दर्द शरीर में 'वात दोष' (वायु/गैस) के अचानक बढ़ जाने के कारण होता है। वातावरण की नमी हमारी हड्डियों के जोड़ों के बीच का प्राकृतिक 'लुब्रिकेंट' (चिकनाई) सुखा देती है, जिससे जकड़न और सूजन पैदा होती है।

शरीर को गर्म रखना है पहली शर्त

मानसून में शरीर की बाहर और अंदर, दोनों तरफ से सिकाई बहुत जरूरी है। बारिश में भीगने के बाद कभी भी सीधे एसी (AC) या पंखे की तेज हवा में न बैठें। भीगे हुए शरीर पर ठंडी हवा लगने से मांसपेशियां (Muscles) तुरंत सिकुड़ जाती हैं, जिससे भयंकर ऐंठन (Cramps), गर्दन में अकड़न (Cervical) या चेहरे का लकवा (Facial Paralysis) तक होने का खतरा रहता है। भीगने पर तुरंत सूखे कपड़े पहनें और शरीर को गर्म रखें।

तेल मालिश (Abhyanga): वात का सबसे बड़ा दुश्मन

वात दोष को शांत करने का दुनिया में सबसे अच्छा प्राकृतिक तरीका 'स्नेहन' यानी तेल की मालिश है। मानसून में त्वचा के रोमछिद्र तेल को बहुत जल्दी सोखते हैं। यह तेल जोड़ों में जाकर चिकनाई (Grease) का काम करता है और दर्द पैदा करने वाली वायु को बाहर धकेल देता है।

कार्यकारी संपादक, बृजपाल सिंह चौहान (एन. डी.) नेचुरोपैथी, www.bschauhan09.blogspot.com, www.facebook.com/bschauhan09

पुरानी बाइकों के लिए वरदान या अभिशाप है ई-20 ईंधन?

नई दिल्ली। देशभर के पेट्रोल पंपों पर तेजी से ई-20 (20% एथिल अल्कोहल और 80% पेट्रोल) ईंधन की उपलब्धता बढ़ाई जा रही है। यद्यपि पर्यावरण को बचाने और कच्चे तेल के आयात को कम करने के लिए यह सरकार का एक सराहनीय कदम है, लेकिन यह नया ईंधन पुरानी मोटरसाइकिलों या स्कूटरों के लिए भारी नुकसानदेह साबित हो सकता है। ऑटोमोबाइल विशेषज्ञों के अनुसार, साल 2023 से पहले बनी पुरानी बाइकों में ई-20 ईंधन का इस्तेमाल करने से उनके इंजन और पार्ट्स को भारी नुकसान पहुंच सकता है।

पुरानी बाइकों पर ई-20 के मुख्य दुष्प्रभाव

रबर और प्लास्टिक पार्ट्स का गलना: एथिल अल्कोहल एक शक्तिशाली विलायक है। यह पुरानी बाइकों के फ्यूल पाइप, रबर रिंग्स और वाशर को धीरे-धीरे गला देता है। इससे फ्यूल लीक होने का खतरा बढ़ जाता है।

इंजन के अंदर जंग: एथिल अल्कोहल हवा से नमी (पानी) को सोखता है। यह नमी पुरानी बाइकों की लोहे की फ्यूल टैंक और इंजन के अंदरूनी हिस्सों में जंग पैदा करती है।

कार्बोरेटर में खराबी: पुरानी मोटरसाइकिलों में कार्बोरेटर सिस्टम होता है। ई-20 ईंधन के कारण कार्बोरेटर के नोजल जाम होजाते हैं, जिससे बाइक स्टार्ट होने में दिक्कत करने लगती है।

माइलेज और परफॉर्मेंस में गिरावट: ई-20 ईंधन की ऊर्जा क्षमता सामान्य पेट्रोल से कम होती है। इस वजह से पुरानी बाइकों का माइलेज 5 से 10 फीसदी तक घट जाता है और इंजन से पूरी पावर नहीं मिलती।

पिस्टन और इंजन का ओवरहीट होना: एथिल अल्कोहल के जलने का तापमान अलग होता है। इससे इंजन जल्दी गर्म होने लगता है, जिससे पिस्टन डैमेज होने का खतरा रहता है।

क्या है इसका समाधान?

अगर आपके पास साल 2023 से पहले का मॉडल है, तो मैकेनिकों की सलाह है कि जब तक संभव हो, सामान्य पेट्रोल (ए-10 या बिना एथिल वाला) का ही इस्तेमाल करें। यदि मजबूरी में ई-20 डलवाना पड़े, तो बाइक को लंबे समय तक खड़ा न रखें, क्योंकि फ्यूल टैंक में रखा पेट्रोल जल्दी नमी सोखता है। अपनी बाइक के फ्यूल फिल्टर और पाइप को हर सर्विसिंग के दौरान जरूर चेक करवाएं।

बिना पर्चे और खर्चे के होगा दिल्ली यूनिवर्सिटी का चुनाव

नई दिल्ली। देश के सबसे प्रतिष्ठित छात्र संघ चुनावों में से एक, दिल्ली यूनिवर्सिटी छात्र संघ चुनाव इस बार पूरी तरह से बिना पर्चे और बिना खर्चे के होना दिख सकता है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल और दिल्ली हाई कोर्ट की सख्त हिदायतों के बाद, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने इस साल के चुनावों को पूरी तरह से 'पेपरलेस' (बिना पर्चे के) और सीमित बजट (बिना खर्चे के) में कराने का ऐतिहासिक फैसला लिया है। विश्वविद्यालय ने साफ कर दिया है कि इस बार दीवारों पर पोस्टर चिपकाने या सड़कों पर फ्लायर्स (पर्चे) उड़ाने वाले उम्मीदवारों पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दिल्ली यूनिवर्सिटी प्रशासन ने इस बार पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए और कैंपस को साफ-सुथरा बनाए रखने के लिए 'जीरो-वेस्ट' चुनावी मॉडल लागू किया है। कैंपस की दीवारों, खंभों या सार्वजनिक संपत्तियों पर किसी भी तरह का पोस्टर लगाना प्रतिबंधित होगा। उम्मीदवार केवल सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम, यूट्यूब, एक्स) और डिजिटल माध्यमों के जरिए ही छात्रों से वोट मांग सकेंगे।

कैंपस डिफेसमेंट एक्ट के तहत केस

यदि कोई उम्मीदवार या उसके समर्थक सड़कों पर पर्चे फेंकते या सार्वजनिक संपत्ति को गंदा करते पाए गए, तो उन पर दिल्ली डिफेसमेंट एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज होगी और उनकी उम्मीदवारी तुरंत रद्द कर दी जाएगी।

कब होगा डीयू छात्रसंघ का चुनाव?

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ का चुनाव 18 सितंबर 2026 को होगा। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, इस चुनाव के नतीजे और मतगणना 19 सितंबर 2026 को घोषित किए जाएंगे।

क्या राजधानी से हमेशा के लिए गायब हो जाएंगी झुग्गियां?

नई दिल्ली। दिल्ली के सुनियोजित विकास के लिए तैयार किए गए 'मास्टर प्लान फॉर दिल्ली 2041' के लागू होने के साथ ही यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या आने वाले समय में राजधानी से झुग्गी-झोपड़ियां पूरी तरह गायब हो जाएंगी? केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय और दिल्ली विकास प्राधिकरण के द्वारा तैयार इस नए मास्टर प्लान में झुग्गी बस्तियों के पुनर्विकास और 'जहां झुग्गी, वहीं मकान' नीति को लेकर एक बड़ा विजन पेश किया गया है, जो दिल्ली की सूरत को पूरी तरह बदल सकता है।

इन-सिटू रिहैबिलिटेशन

जहां झुग्गी, वहीं पक्का मकान, मास्टर प्लान 2041 के तहत सरकार का लक्ष्य झुग्गियों को हटाकर लोगों को बेघर करना नहीं, बल्कि उन्हें मुख्यधारा में शामिल करना है।

पक्के बहुमंजिला फ्लैट: नई नीति के तहत झुग्गीवासियों को उसी स्थान पर या उसके बिल्कुल नज़दीक आधुनिक सुविधाओं से लैस बहुमंजिला पक्के फ्लैट दिए जा रहे हैं। कालकाजी एक्सटेंशन और जेलरवाला बाग जैसी परियोजनाएं इसका सफल उदाहरण हैं।

ज़मीन का बेहतर उपयोग

विशेषज्ञों और शहरी नियोजकों का मानना है कि इस योजना से दिल्ली की जमीन का बेहतर उपयोग होगा। झुग्गियों के हटने से जो जमीन खाली होगी, उसका उपयोग पार्कों, सड़कों और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं के लिए किया जाएगा। हालांकि, कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने चिंता जताई है कि यदि इन बहुमंजिला सोसायटियों के रखरखाव पर ध्यान नहीं दिया गया, तो ये भविष्य में 'वर्टिकल स्लम' का रूप ले सकती हैं।

प्रमुख चुनौतियां

पात्रता की क़ानूनी अड़चनें: कट-ऑफ तारीख और ज़रूरी दस्तावेजों की कमी के कारण कई झुग्गीवासी पक्के मकानों की पात्रता से बाहर होजाते हैं, जिससे क़ानूनी विवाद बढ़ते हैं।

अस्थायी विस्थापन: निर्माण कार्य पूरा होने तक (लगभग 2-3 वर्ष) झुग्गीवासियों को किराए के मकानों या ट्रांजिट कैंपों में शिफ्ट करना एक बेहद जटिल प्रक्रिया है।

भारतीय रेलवे ने दौड़ाई सबसे लंबी मालगाड़ी 'अवध महाशक्ति'

नई दिल्ली/गोरखपुर। भारतीय रेलवे के पूर्वोत्तर रेलवे मंडल ने देश के माल ढुलाई नेटवर्क में एक नया इतिहास रच दिया है। रेलवे प्रशासन ने अपनी सबसे लंबी मालगाड़ी 'अवध महाशक्ति' का सफल परिचालन किया है। इस विशालकाय ट्रेन में कई सामान्य मालगाड़ियों के रैक (डिब्बों) को एक साथ जोड़कर चलाया गया। इसकी कमान हाई-हॉर्सपावर वाले आधुनिक इंजनों के हाथ में थी।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार, 'अवध महाशक्ति' जैसी लंबी ट्रेनों के संचालन से मुख्य रेल मार्गों पर ट्रैफिक का दबाव कम होगा, कार्बन उत्सर्जन घटेगा और माल को गंतव्य तक पहुंचाने के समय में भारी कमी आएगी।

अभिभावक ध्यान दें: बच्चों का आधार 30 सितंबर तक कराएं अपडेट

नई दिल्ली। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने माता-पिता और अभिभावकों के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत 05 से 17 वर्ष की आयु के बच्चों का आधार, अनिवार्य बायोमेट्रिक अपडेट कराने की अंतिम तिथि 30 सितंबर तय की गई है। राहत की बात यह है कि इस तय समयसीमा तक बच्चों के फिंगरप्रिंट, आईरिस स्कैन और फोटो को अपडेट कराने की सुविधा पूरी तरह से मुफ्त उपलब्ध कराई जा रही है। इसके बाद अपडेट कराने पर अभिभावकों को निर्धारित शुल्क देना होगा।

क्यों ज़रूरी है यह अपडेट?

बचपन का डेटा बदलना: जब बच्चे 05 वर्ष से कम उम्र के होते हैं, तब उनका 'ब्लू आधार' (बाल आधार) बनता है, जिसमें बायोमेट्रिक्स शामिल नहीं होते। उम्र बढ़ने के साथ बच्चों के शारीरिक बदलावों के कारण फिंगरप्रिंट अपडेट करना अनिवार्य होता है।

दो चरणों में अनिवार्य प्रक्रिया: नियमों के मुताबिक, पहला अनिवार्य बायोमेट्रिक अपडेट 05 से 07 वर्ष की उम्र में और दूसरा अपडेट 15 से 17 वर्ष की उम्र के बीच कराना आवश्यक है।

शक्कर के मूल्य में 20 प्रतिशत की रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी

नई दिल्ली। देश में आम आदमी की रसोई पर महंगाई का एक और बड़ा बोझ आ पड़ा है। देश के प्रमुख चीनी व्यापार केंद्रों और थोक बाजारों में शक्कर की कीमतें अगस्त महीने में करीब 20 प्रतिशत तक बढ़कर अब तक के सबसे उच्चतम (रिकॉर्ड) स्तर पर पहुंच गई हैं। उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र जैसी प्रमुख शक्कर उत्पादक बेल्टों में एक्स-फैक्ट्री और थोक दाम 5,400 रुपए से 5,800 रुपए प्रति क्विंटल का आंकड़ा पार कर चुके हैं। वहीं, देश के कई राज्यों के खुदरा बाजारों में चीनी 60 से 65 रुपए प्रति किलोग्राम की दर पर बिक रही है, जिससे आम उपभोक्ताओं के बजट का गणित पूरी तरह बिगड़ गया है।

माता जगदम्बे की साधना-आराधना से होता है हमारी आन्तरिक चेतनाशक्ति का विकासः सौरभ द्विवेदी

कबीरधाम, छ.ग.। ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से दिनांक 22-23 अगस्त को वीर सावरकर भवन, डॉ. अम्बेडकर चौक, ज़िला-कबीरधाम, छत्तीसगढ़ में आध्यात्मिक चेतना और जनकल्याण की भावना को लेकर आयोजित 24 घंटे का श्री दुर्गाचालीसा अखंड पाठ भक्तिभाव से परिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस भव्य धार्मिक अनुष्ठान के समापन अवसर पर भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी ने विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए समाज में धर्म की पुनर्स्थापना, चेतनात्मक शक्ति के विकास और शक्ति की आराधना के महत्त्व पर विशेष बल देते हुए कहा कि ‘‘ जब किसी सद्गुरुदेव के द्वारा धर्म की पुनर्स्थापना और चेतना के विस्तार का कार्य किया जाता है, तो उसकी सीमारेखा असीम होती है। अपनी तप की शक्ति से वे चाहते हैं कि इस धरती के कोने-कोने तक जहाँ भी मनुष्यों का निवास है, उनकी चेतनाशक्ति का विकास हो और वे धर्मानुरागी बनें।

इस कलिकाल में हमारा सौभाग्य है कि जहाँ इस धरती पर हज़ारों-लाखों तथाकथित ढोंगी-पाखंडी धर्माचार्य विद्यमान हैं, वहीं हमें युग चेतना पुरुष योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज गुरु रूप में मिले हैं। जब आप धर्मग्रंथों का अध्ययन करेंगे, तो पाएंगे कि गुरु किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, बल्कि वह सूर्य के समान प्रकाशमयी शक्तिस्वरूप है। चाहे घना से घना अन्धकार हो, यदि वहाँ गुरुचेतना की एक भी किरण पड़ जाए, तो वह अन्धकार पूरी तरह समाप्त होजाता है। तो, जानिए गुरु एक पथप्रदर्शक है, एक विचारधारा है। वह विचारधारा कि समाज को नशामुक्त, मांसाहारमुक्त और चरित्रवान् बनाना और ‘माँ’की साधना-आराधना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, तभी हम कलिकाल की भयावहता से मुक्ति पा सकते हैं।

माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की साधना-आराधना से न केवल हमारी आन्तरिक चेतनाशक्ति का विकास होता है, बल्कि इससे अनीति-अन्याय-अधर्म और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस भी मिलता है, आत्मशक्ति प्रबल होती है। मनुष्य आज बाह्य संसाधनों के अभाव से दुःखी नहीं है, वह दुःखी है अहंकार से, वह दुःखी है ईर्ष्या-द्वेष की भावना से, वह दुःखी है नशे के सेवन से, वह दुःखी है चरित्रहीनता के कारण। कहते हैं कि ‘मन चंगा तो कठौती में गंगा।’ यदि आपका मन चंगा है; पावन है, पवित्र है, तो चाहे खाने के लिए दो रोटी और नमक ही क्यों न मिल जाए, आप गर्व से ऐसे चलेंगे, जैसे कि आप धर्मयोद्धा हों। कोई यह नहीं कह सकता कि आपके जीवन में कहीं कोई कमी है।

अपनी चेतनाशक्ति को प्रभावक बनाने के लिए, नशामुक्त जीवन प्राप्त करने के लिए पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम में दिनांक 19-20-21 अक्टूबर 2026 को आयोजित शक्ति चेतना जनजागरण ‘त्रिशक्ति साधना’ शिविर में अवश्य पहुंचे और यदि आप आयोजित इस त्रिदिवसीय शिविर की तीन दिव्य आरतियों में से एक भी आरती की दिव्य ऊर्जा को प्राप्त कर लेते हैं, तो निश्चित ही आपका जीवन आनन्द से पुलक उठेगा।’’

कार्यक्रम के समापन पश्चात् विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हज़ारों भक्तों ने महाप्रसाद ग्रहण किया।

स्वत्वाधिकारी त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा. लि. के लिए सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा शुक्ला के द्वारा हितकारिणी प्रिन्टिंग प्रेस, सिविक सेंटर, ज़िला-जबलपुर (म.प्र.) से मुद्रित तथा पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, पोस्ट-मऊ, तहसील-ब्यौहारी, ज़िला-शहडोल (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पर्क सूत्रः 9981657948, 8965942312, Email-sankalpshakti09@gmail.com, RNI NO-MPHIN/2009/31042 न्यायालयीन क्षेत्राधिकार ब्यौहारी।